International Journal of Humanities and Social Science Research
www.socialsciencejournal.in
ISSN: 2455-2070
Received: 02-12-2024, Accepted: 01-01-2025, Published: 16-01-2025
Volume 11, Issue 1, 2025, Page No. 24-27

धरना परम्परा के सिरमोर के रूप में आऊवा

महेन्द्र सिंह
शोधार्थी, इतिहास विभाग, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर, राजस्थान, भारत

सारांश
आऊवा का धरना विश्व इतिहास की वह ऐतिहासिक घटना है जिसने लोक के इतिहास में अपनी अमिट छाप छोड़ी है। चारणों की दृष्टि में धरना कोई सामान्य कर्म नहीं था। इस परम्परा को निरन्तरता देने के लिए चारणों ने काव्य रचे। इन काव्यों से लोगों में वीरता एवं उत्साह का ऐसा संचरण हुआ कि देश एवं देश का इतिहास गौरवान्वित हो गया। लोगों ने अन्याय एवं अत्याचार का न केवल सामना किया अपितु उन अत्याचारियों को धरने के बल धूल भी चटाई। इसके लिए शक्ति की आराधना का काव्य भी रचा गया। इसी काव्य ने लोगों को मृत्यु भय से मुक्त किया। यही इस काव्य की सार्थकता है। इसीलिए चारणों ने धरनास्थल पर मृत्यु के वरण को श्रेष्ठ कर्म माना। ऐसे मरण को उत्सव व अनुष्ठान का रूप दिया। इसी दर्शन के बल पर पीड़ित, दलित तथा निरुपाय समाज भयमुक्त होकर धरनास्थल पर जूझने की आकांक्षा लेकर बड़ी से बड़ी राजशक्ति से लोहा लेने को तत्पर रहा।

मूलशब्द: धरना, आऊवा, तागा, समाज, मारवाड़, अहिंसक अवज्ञा, चारण समाज, मंदिर, राष्ट्रकवि

धरनों की परम्परा में आऊवा का धरना इतिहास में विख्यात है व इतिहास में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इस समय मारवाड़ के राजा उदयसिंह जिनके विरूद्ध चारणों ने धरणा दिया।[1] आऊवा के धरने की भी अपनी एक कथा है। यह चारणवाड़ा गाँव (सिवाना) के गोविन्द बोगसा से सम्बन्धित घटना है। चारणवाड़ा गाँव गोविन्द बोगसा के शासन का गाँव था। जब मारवाड़ के किले पर मुगलों का अधिकार हो गया तो राज घराने की महिलाओं को वहाँ से निकाल कर सुरक्षित स्थान सिवाने की पहाड़ियों में भेजा गया।

चित्र 1: कामेश्वर महादेव मंदिर आऊवा का मुख्य द्वार एवं स्मृति स्तम्भ

राज घराने की महिलाएं जिस रथ (पालकी) में सवार होकर जा रही थीं उस रथ का एक बैल चारणवाड़ा गाँव की सीमा में थक गया। तब राजा के सेवकों ने बिना कुछ सोच विचार के वहीं पास ही एक कुआ जोत रहे किसान से बलपूर्वक बैल छीन कर उसे रथ में जोड़ लिया। वह किसान अपने साथ घटित इस घटना की सूचना देने गाँव के शासन कर्त्ता (मुखिया) गोविन्द बोगसा के पास पहुँचा व आप बीती सुनाई। किसान की समस्या सुनकर तुरन्त गोविन्द बोगसा घटना स्थल पर पहुँचे तथा राजा के सेवकों को उनके द्वारा किये गये अन्यायपूर्ण कार्य पर फटकार लगाई कि चारणों के शासन क्षेत्र में मर्यादा उल्लंघन की तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई यदि राजा ही मर्यादा को तोड़ेगा तो इस समाज का अस्तित्व कैसे बचेगा ऐसा कहकर गोविन्द बोगसा ने उस रथ से किसान के बैल को खोल लिया। रथ को धक्का लगने से अन्दर बैठे उदयसिंह की माता झाली रानी नीचे गिर पड़े और उनका एक हाथ टूट गया।[2]

चारणवाड़ा की इस घटना के कई दशक बाद संवत 1640 वि. में उदय सिंह मारवाड़ का राजा बना। उदयसिंह द्वारा संवत 1643 (1586 ई.) में गोविन्द बोगसा के शासन का गाँव चारणवाड़ा सहित चारणों के 16 गाँवों और साथ में ब्राह्मणों के 18 गाँव जब्त कर लिये।[3] जिस किसी ने भी राजा के इस व्यवहार का विरोध किया या उसे समझाने का प्रयास किया तो उसी की जागीर जब्त करते करते आखिर में मारवाड़ के लगभग सभी चारणों की जागीरें जब्त कर ली गई। चारणों ने विकल्प के रूप में सामूहिक रूप से इसका विरोध किया पर राजा उदयसिंह पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा व वे अपने निर्णय पर कायम रहे तब चारणों ने अंतिम विकल्प के रूप में धरने का ऐलान किया तो राजा ने अहिंसक

अवज्ञा की भी इजाजत नहीं दी तो यह बात मारवाड़ के कुछ सामन्तों को ठीक नहीं लगी। मारवाड़ के प्रधान गोपाल दास चांपावत के साथ बगड़ी, रायपुर एवं पीपाड़ के सामन्त राजा को समझाने के लिए गए। पर राजा ने इनकी भी नहीं सुनी। ऐसी विकट स्थिति में चारणों के शासन की मर्यादा की रक्षा के लिए गोपाल दास चांपावत ने बड़ा निर्णय लिया तथा अपनी जागीर पाली का पट्टा राजा को सौंप दिया और राजा से कहा कि आऊवा की जागीर मेरे पूर्वज चांपा राठौड़ की स्थापित की हुई है उसका मारवाड़ रियासत से कोई लेना देना नहीं है। चारण आऊवा में धरना देंगे तथा मैं उनकी सेवा में रहूँगा। इस प्रकार चारणों ने आऊवा में धरना देने का निश्चय किया। आऊवा के निकट गांगांविया वाहळा (गोगिया नाला) जहाँ सूकड़ी नदी में मिलता है उसी के किनारे स्थित कामेश्वर महादेव के मंदिर का धरने हेतु चयन किया गया।

मारवाड़ के राजा उदयसिंह द्वारा चारणों के शासन की मर्यादा के विरुद्ध किए गए अन्यायपूर्ण व्यवहार के विरोध में संवत 1643 वि. के चौत्र माह के सुदि पक्ष में धरनेका आयोजन कामेश्वर महादेव मंदिर में किया गया। सारे देश के चारण इस धरने में सम्मिलित हुए। इस धरने में चारणों के प्रति सहानुभूति व्यक्त करने के लिए पुरोहित, ब्राह्मण व अन्य समुदायों के लोग भी सम्मिलित हुए।[4] इसकी जानकारी हमें निम्न छंद से प्राप्त होती है –

सोळासैह संवत, ताम तै बरस तिंयाळौ।
उदक धरा ऊथपी, चा 'ळो चक्रवतियां चाळ्यौ।
खेरावतियां रावतां, तलब मेल्हे तेड़ाया।
चारण ब्रामण भाट, आउवै सारा आया।
अप हत्थ करण नव नव अणी, रहै सीस ऊपर रूठा।
राव सिर मरण धरणौ रचे, आण मिल्या स्रब एकठा।[5]

इस धरने के प्रति दिखाई गई राजा उदयसिंह की हठधर्मिता के कारण उनकी ऐसी लोक निन्दा हुई कि उनका नाम ही लोक में अवाच्य घोषित हो गया। कोई भी व्यक्ति उसका नाम जीभ पर लाना अपकृत्य समझने लगा तथा उसे मोटा राजा के नाम से ही संबोधित किया जाने लगा।

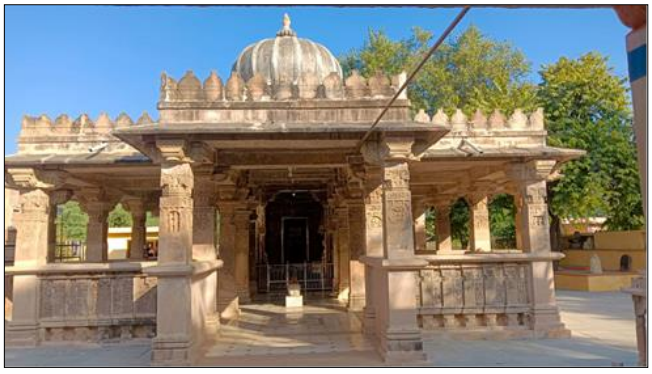

चित्र 2: कामेश्वर महादेव मंदिर आऊवा

आऊवा के कामेश्वर महादेव के मंदिर में राष्ट्रकवि दुरसा आढा के नेतृत्व में धरना आयोजित किया जाना तय हुआ। धरने की सुरक्षार्थ मांडण के पुत्र गोपालदास चांपावत ने अपने आठ पुत्रों भोपत, बीठलदास, दलपत, बलू, खेतल, हाथीराम, राघव दास व हरीराम को चारणों की सेवा में लगा दिया व स्वयं ने योद्धाओं के साथ धरने की रक्षा का भार ले लिया। राजा ने क्रोधित होकर मदमस्त हाथी को धरनार्थियों पर छुड़वाया पर गोपालदास ने उसे धरनास्थल तक आने ही नहीं दिया।

धरणे को सफल होता देख कर मोटा राजा उदयसिंह ने धरणार्थियों को समझाने के लिए अक्खा बारहट को भेजने का निर्णय लिया।[6] अक्खा बारहट जोधपुर के पूर्व महाराजा मालदेव के कृपा पात्र भाण बारहट का पुत्र था। उनकी आयु जब पाँच माह की थी, उसी समय उनके माता–पिता का देहान्त हो गया। मालदेव ने इन्हें अपनी रानी झाली को सौंप दिया, जिन्होंने अक्खा को अपना दूध पिलाकर बड़ा किया।[7] उस समय मोटा राजा उदय सिंह उनका हमजोली था। मोटा राजा उदयसिंह तथा अक्खा बारहट दोनों के संबंध मित्रवत् थे। मोटा राजा उदयसिंह ने अक्खा बारहट को धरणार्थियों को समझाने के लिए आऊवा जाने का आदेश दिया। आदेश पाकर अक्खा बारहट आऊवा पहुँचा। वहाँ चारणों के जोश की स्थिति देखकर स्वयं द्रवित हो गया। चारणों ने अक्खा बारहट को आऊवा के धरणें में देखा तो आश्चर्यचकित रह गए। धरणे का नेतृत्व कर रहे दुरसा आढ़ा को पता नहीं था कि अक्खा उन्हें धरणा हटाने के लिए समझाने आया हे। उन्होंने तुरन्त अक्खा बारहट के धरणे में शामिल होने के लिए स्वागत में एक सोरठा सुना दिया।

अखवी आवंताह, बारह बीसोतर तणी।
तेज वदन तपजांह, भाण दवादस भांणवत।।
काली कांवल तांण, ऊतारी ब्रन री अखाँ।
राव तणै सिर रांण, भली ओढ़ाडी भांणवत।[8]

हे अक्खा बारहठ्! तुम्हारे धरणे में शामिल होते ही जैसे बीस वंश वृक्षों वाला रक्षक आ गया है। हे भाण रोहड़िया के पुत्र अक्खा! यहाँ आते तुम्हारे मुख का तेज दोपहर के तपते बारह सूर्य के बराबर हो गया है। तुमने चारण वर्ण के सिर पर संकट काल में काली कंबल का कलंक उतार दिया है। रोहड़िया वंश के राज तुमने मोटे राजा के सिर पर कलंक की चादर ओढ़ा दी है। धरणे के माहौल तथा दुरसा आढ़ा के वचनों से अक्खा प्रभावित हो गया। वह भी धरणे में शामिल हो गया। मोटा राजा उदयसिंह को जब इस बात का पता चला तो वह अक्खा बारहट से बहुत नाराज हुआ। उन्होंने अक्खा बारहठ के पास एक बड़ी कटार भेज कर कहलवाया कि हे अक्खा! तुमने मेरी बात नहीं मानी है, अब यह कटार अपने गुदा मलद्वार पर मारना। अक्खा बारहट ने सहर्ष पर कटार की नोक को अपनी गुदा में प्रहार कर आत्म बलिदान कर लिया।[9]

त्याग गांम इकतीस, धणी तजियौ छत्र धारी।
मिळियौ धरणै मांय, बडै मन मरण बिचारी।
धणी हुकम सिर धार, पहर जमदाढ़ां पोढे।
रंग हो रोहड़ रांण, अती जस सिर पर ओढे।
बीसोतर साख इक मुख भणे, दिल सुध जाती ब्रिद दियौ।
तिन दीह अखौ रैणवां तिलक, बरण पत्तसाह बज्जियौ।।

अक्खा बारहठ ने एकतीस गाँव त्यागे। मोटे राजा को छोड़ा। धरने में शामिल हुआ। बड़े मन से मरण का वरण किया। मोटे राजा के आदेशानुसार कटार की नोक के सिंहार पर बैठ उसी मरण शैया पर सोया। हे रोहड़िया वंश के राजा तुझे रंग है। तुने तो मरण शैया पर भी अत्यधिक यश का दुशाला ओढा। बीस वंश वृक्षों की शाखाओं वाले चारणों के मुख से एक ही वाणी उच्चरित हो रही है तथा सब ने मिल शुद्ध हृदय से उस दिन चारणों का तिलक स्वीकार कर, चारण वर्ण के बादशाह का विरूद दिया। उसी दिन से अक्खा बारहठ चारण वर्ण का बादशाह कहलाया।[10]

दो दिनों तक चारणों ने वहाँ धरना दिया। गोपालदास चांपावत ने सभी एकत्रित धरनार्थियों की सेवा की। तीसरे दिन धरनार्थी प्रातःकाल ब्रह्म मुहुर्त में धरने की अंतिम रस्म हेतु महान कार्य (आत्म बलिदान) हेतु स्नान के बाद तुलसीपत्र व गंगाजल पान कर तैयार हुए। एक हाथ में कटार लेकर व दूसरे हाथ में माला लेकर चित्त में परमात्मा को धारण किया। गोयंद ढोली मंदिर के

शिखर पर सूर्योदय की प्रतीक्षा में बैठा सोचने लगा इतने सृजनधर्मी चारण मेरे डंके की चोट (ढोल के ढमके) पर एक साथ आत्म बलिदान करेंगे। वह रोमांचित हो गया। अर्द्ध सूर्य के दर्शन करते ही कटार गले में पहन कर उसने आत्मोत्सर्ग किया।

चित्र 3: धरणा शिरोमणी अक्खा जी बारहठ

गोयंद ढोली धरने में आहुति देने वाला प्रथम व्यक्ति इनके वंशज गोयंद पोता कहलाते है। ये चारणों के याचक है। इन्हें चारणों के बराबर बैठकर बाजोट पर भोजन करने का सम्मान प्राप्त है तथा इन्हें दोहरे नेग दिये जाते हैं। गोयंद के लिए कहा गया एक प्रसिद्ध दूहा इस प्रकार है –

आउवै स्रब भेळा हुआ, सोह बीसोतर साख।
गोयंद सूं बिछड़ां नहीं, तीन हजार तलाक।।[11]

अर्थात् समस्त वंशवृक्षों की शाखाओं के चारण आऊवा में एकत्र थे। वहीं समस्त चारणों ने संकल्प लिया कि गोयंद के वंशजों से चारण कभी अलग नहीं होंगे।

उसके साथ ही उस शिव के मंदिर में अपने शौर्य के बल पर चारणत्व के मार्ग पर चलते हुए गले की राखड़ी (चारणों द्वारा काली ऊन का गले में धारण किया जाने वाला धागा) तोड़ कर शिवलिंग पर चढ़ाते हुए कटार गले में धारण कर धागा करने लगे। कुछ बगल (कोल) में कटारी के प्रहार कर तागा करने लगे। कुछ धरनार्थी सात सात कटार शरीरमें धारण कर आत्म बलिदान करने लगे। कुछ धरनार्थी तेलिया कर अग्निस्नान करते हुए हाथ में माला लेकर जलती मशाल की तरह सूर्य की तरफ कदम बढ़ाने लगे। कुछ धरनार्थी बैलगाडी में कपास भरकर, उस पर तेल सींचकर स्वयं उस पर आरूढ हो अग्नि स्नान कर मंदिर की परिक्रमा करते व माला फिराते जाते। अन्य धरनार्थी धरने के मुखिया राष्ट्रकवि दुरसा आढा के साथ उठ खड़े हुए तथा गले में कटारी धारण कर माला आगे कर दी। इस तरह माला अगले हाथ में पहुँचते ही वह भी गले में कटारी धारण करने की धागा प्रणाली को दुहराता। इस प्रकार माला फिरती रही तथा कटार के प्रहार चलते रहे। कुछ धरनार्थी पांव के अंगूठे से कटारी का प्रहार करते करते शीश तक प्रहार कर आत्मोत्सर्ग कर रहे थे।

आऊवा के धरने में चवालीस खिड़ियों, पैतीस रोहड़िया बारहठों, बीस सांदुओं, सतरह रतनुओं, सोलह लालसों, नव आढों, आठ कवियों, सात सिंढायचों, पांच आसियों, चार देवलों, तीन मीसणों, दो बरसड़ों, दो गाडणों (बाप–बेटे), दो देथों, एक किनिया, एक मेहडू, एक भादा, एकसामौर, एक जगट, एक बीठू, एक बणसूर, एक बोगसा, एक दुल्हे के वेश में खिड़िया जो सौदा बारहठों का दामाद बनकर सूर्य के समान तेजस्वी रूप में उदित होकर धरने में शामिल हुआ।[12] दुल्हे के वेश में यह सूरवीर सांखड़ावास का जग्गा खिड़िया था। राष्ट्र की विभूतियों के इस आत्म बलिदान का कारण बना मारवाड़ का राजा उदयसिंह जिसका नाम ही लोक ने अवाच्य करार दिया तथा वह अवाच्य नाम वाला राजा फिर भी निर्लज्ज ही बना रहा। सारण के निर्मल पीर ने राजा को समझाया कि जब्त जागीरें चारणों को लौटा दो अन्यथा विनाश हो जाएगा। इससे भयभीत होकर राजा सारण पहुँचा व पीर के चरणों में गिरा। इस प्रकार लगभग 185 वीर पुरूषों ने इस धरने में अपने प्राणों की आहुति दी तथा अनेक घायल हुए। गोपालदास चांपावत ने धरने में आत्मोत्सर्ग करने वाले चारणों व अन्यों का अंतिम संस्कार विधि विधान के साथ अपने हाथों गांगाविया वाहळा (गोगिया नाला) के किनारे पर महादेव के मंदिर के प्रवेश द्वार के सामने करवाया तथा अपने एक हाथ को चारणों का हाथ घोषित कर समस्त क्रिया कर्म सम्पन्न करवाए। जो घायल हुए उनकी सेवा चिकित्सा करवा कर उनके निर्वाह की व्यवस्था की। रायपुर, बगड़ी व पीपाड़ के मुखिया पहले तो चारणों के साथ थे पर फिर मोटा राजा के दबाव में किनारा कर गए। केवल गोपालदास चांपावत ही चारणों के पक्ष में बना रहा। चारणों एवं क्षत्रियों के सनातन सम्बन्ध को अखंड बनाए रखने के लिए आऊवा के अधिपति गोपालदास चांपावत एवं आऊवा गाँव के लोगों का योगदान इतिहास में हमेशा उल्लेखनीय रहेगा। जब तक यह पृथ्वी रहेगी तब तक आऊवा गाँव के लोगों एवं गोपालदास चांपावत की कीर्ति लोक के मुख से कही जाती रहेगी।

अपने भाई–भतीजों पुत्रों को साथ लेकर चारणों के पदचिन्हों का अनुसरण कर उनके पीछे पीछे बीकानेर की तरफ प्रयाण करते हुए गोपालदास चांपावत भाग्यशाली हो गया। बीकानेर के महाराजा राय सिंह ने सभी को सम्मान दिया एवं गोपालदास चांपावत की भुजा को प्रतीक के रूप में चारण की भुजा मानकर उसकी पूजा की। उधर मोटे राजा का कलंक की आग में तड़फते तड़फते देहान्त हो गया। सूर सिंह मारवाड़ का राजा बना। सूरसिंह ने सर्वप्रथम गोपालदास चांपावत को मारवाड़ बुलाया तथा उसे आदर के साथ जागीर लौटाकर निवेदन किया चारणों को पुनः मारवाड़ की धरती पर लाओ। गोपालदास ने अस्वीकार करते हुए कहा चारण लाना संभव नहीं है। तब अनुनय विनय करते हुए राजा सूरसिंह ने कहा कोई समाधान निकालें तो फिर गोपालदास ने ही रास्ता निकालते हुए अपने हाथ की चारण के हाथ के रूप में प्रसिद्धी के बहाने कहा यदि इस हाथ को आप चारण का हाथ मानकर पिता के कुकृत्य पर पश्चाताप प्रकट कर संकल्प लेकर मेरे हाथ में दें तो चारणों को मनाने की चेष्ठा करूं। राजा सूरसिंह ने गोपालदास की बात स्वीकार ऐसा ही किया। गोपालदास बीकानेर जाकर चारणों के पास पहुँचे तथा जो बात घटित हुई उसे बताते हुए निर्णय चारणों पर ही छोड़ दिया। गोपालदास के हाथ को तो चारण अपना ही हाथ मानते थे इसलिए वापिस मारवाड़ में आने के लिए राजी हुए। इस प्रसंग पर रचित एक छंद –

रायसिंह बीकांण, पटो दीधो भुज पूजे।
सैणां पायौ सुक्ख, धरा बांका सत्र धूजे।
मुरधर उदियौ सिंघ, पड़े छत्रपत दिन पूगौ।
सूरसिंघ तिण पाट, अरक जोधाणैं ऊगौ।
कर अरज दिराया गाम के, बीदगां आघ बाधारियौ।
रिण त्याग अघट चांपाहरौ, पाल भलां पाधारियौ।।[13]

सीसोदिया, राठौड़, खीची, हाडा, कछवाहे, भाटी, देवड़ा, जाड़ेजा आदि किसी भी राजवंश ने ऐसा नहीं किया जैसा पाली एवं

रणसी गाँव के एक लाख के पट्टेदार गोपालदास चांपावत ने किया। चारणों की इस मर्यादा रक्षा की अहिंसक लड़ाई में अपना घर बार छोड़कर चारणों के पीछे पीछे उनके साथ ही रवाना हो गया। ऐसा त्याग और सेवा भाव अतीत में कभी नहीं देखा गया भविष्य में भी ऐसे उदाहरण मिलना मुश्किल है। इस प्रकार चारण एवं चांपावतों का ऐसा अटूट संबंध हो गया कि इनके संबंधों को लेकर लोकोक्ति प्रसिद्ध हो गई कि चारण से जो नहीं निभाए वह चांपावत नही तथा चांपावत से जो नहीं निभाए वह चारण नहीं। आऊवा के धरने में मूंधियाड़ का ठाकुर अक्खा बारहठ आत्मोत्सर्ग करने वालों में मुख्य था। अक्खा बारहठ नंगी कटार की नोक के सिंहासन पर बैठ कर प्राणोत्सर्ग किया। उसने अपनी जागीर के 31 गाँव त्यागे। राजा का त्याग किया। धरने में शामिल होकर बड़ी समझ के साथ मरण का वरण किया। राजा के आदेशानुसार कटारी की नोक पर बैठा। अत्यधिक यश पाया। उसी दिन अक्खा बारहठ को चारण वर्ण के बादशाह का खिताब चारणों ने दिया। उस युग के महान चारण शंकर बारहठ ने मारवाड़ का पानी त्याग दिया। उसे बीकानेर के महाराजा रायसिंह ने 210 गाँवों सहित फलौदी प्रदान की जहाँ उसने बचे हुएधरनार्थियों एवं छह वर्गों के परिवारों के रहने खाने की व्यवस्था की तथा यश कमाया। बीकानेर के राजा ने शंकर बारहठ को उनके सेवाभाव के कारण सवा करोड़ का पुरस्कार देकर पांडवसर (चूरू) एवं नागौर का पट्टा दिया। धरने का नेतृत्व कर रहे राष्ट्रकवि दूरसा आढ़ा द्वरा धागा किया गया लेकिन देवी कृपा से वह बच गये।

राष्ट्रकवि दुरसा आढ़ा

दुरसा आढ़ा दिल्ली दरबार में सरे आम मोटे राजा को लज्जित किया।[14] गले में कटारी का घाव खाने से दुरसा आढा के गले की आवाज विकलांग हो गई। दरबार में अकबर ने पूछा कविवर आपकी आवाज कैसे बिगड़ी। जवाब में दुरसा आढ़ा ने कहा कुत्ते ने काट लिया। अकबर ने जिज्ञासा वश पुनरू प्रश्न किया इतना बड़ा कुत्ता दुरसा ने मोटे राजा की तरफ इशारा करते हुए कहा यह आपके सामने हो तो उपस्थित है। सांखड़ावास (पाली) का जग्गा खिड़िया दुल्हे के वेश में धरने में शामिल हुआ। धरनार्थियों के आशीर्वाद से स्वयं एवं पिता के हिस्से की कटार खाकर भी जीवित बच गया। माला सांदू इस धरने से विमुख होकर मोटे राजा का साथ देने के कारण लोक निन्दा का पात्र बना तथा लोक बहिस्कृत रहा। आऊवा के धरने से सम्बन्धित साहित्य भी विपुल मात्रा में रचा गया।

संदर्भ सुची

1. एम.आई. पटेलः चारण सर्जक परिचय, पृ. 71
2. मोहनलाल जिज्ञासुः चारण साहित्य का इतिहास, भाग 1, पृ132
3. मोहनसिंह कानोताः चांपावतों का इतिहास, पृ. 104
4. (क) पं. विश्वेश्वरनाथ रेऊः मारवाड़ का इतिहास, पृ. 174
   (ख) रिपोर्ट मर्दम शुमारी, पृ. 343–344
   (ग) ठा. मोहन सिंह कानोताः चांपावतों का इतिहास, पृ. 105
5. भंवरसिंह सामौरः आऊवा का धरणा, पृ. 29
6. कुंवर श्री शिवसिंह चोयलः 'चारण' त्रैमासिक पत्रका, अंक 2, पृ. 38
7. मोहनलाल जिज्ञासुः चारण साहित्य का इतिहास, भाग 1, पृ. 132
8. मोहनलाल जिज्ञासुः चारण साहित्य का इतिहास, भाग 1, पृ. 132
9. (क) एम.आई. पटेलः चारण सर्जक परिचय, पृ. 83
   (ख) झवेर चन्द मेघाणीः चारण अने चारण साहित्य, पृ. 15
10. भंवर सिंह सामौरः आऊवा का धरणा, पृ. 35
11. वही, पृ. 34
12. भंवर सिंह सामौरः आऊवा का धरणा, पृ. 24–25
13. भंवर सिंह सामौरः आऊवा का धरणा, पृ. 34
14. झवेर चन्द मेघाणीः चारण अने चारणी साहित्य, पृ. 16